विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -२४ -०५ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -४ नर हो न निराश करो मन को नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे ।

भावार्थ -

राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्तइस कविता में जीवन के संघर्षों से निराश हो चुके लोगों को संबोधित करते हुए कहते हैं-
हे मानव, अपने मन को निराश मत करो। कुछ काम करो। कुछ ऐसा काम करो जिससे इस संसार में नाम हो। तुम्हारा जन्म किस लिए हुआ है, इसे समझो, और जीवन को बैठकर मत गंवाओ। इस जीवन का कुछ तो उपयोग करो। हे मानव, निराश मत हो।

इससे पहले कि अवसर हाथ से निकल जाए, सम्भल जाओ। मन से किया गया प्रयास कभी व्यर्थ नहीं होता। इस संसार को कल्पना में मत जिओ। बल्कि अपना रास्ता खुद बनाओ। तुम्हें सहारा देने के लिए ईश्वर हैं। हे मानव, निराश मत हो।

जब तुम्हें इस संसार के सभी साधन सुलभ हैं। तो तुमसे साररूप कर्मफल कहाँ दूर जा सकता है। तुम अपने आत्मबल रूपी अमृत के बल पर उठो और उठकर अमरत्व के नए नियम लिखो। अर्थात सफलता की नई कहानी लिखो। इस संसार रूपी जंगल में तुम शेर की भांति रहो। हे मानव, अपने मन को निराश मत करो।

अपने गौरव का हमेशा ध्यान रखो। अपने महत्व को समझो। ऐसे कर्म करो कि मृत्यु के बाद भी हमारा यश गान हो। चाहे सब कुछ चला जाये लेकिन हमारा आत्मसम्मान नहीं जाना चाहिए। चाहे जो हो कर्म का त्याग मत करो। हे मानव, मन को निराश मत करो।

ईश्वर ने तुमको दो हाथ दिए हैं। सभी सुख, सुविधा की वस्तुएं प्रदान कर दी है। फिर भी अगर तुम उनको प्राप्त न करो तो इसमें किसका दोष है? इस संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो प्राप्त न की जा सके। इसलिए अपने मन को निराश मत करो।

ऐसा कौन सा गौरव है, तुम जिसके योग्य नहीं हो? ऐसा कौन सा सुख है, जो तुम्हें नहीं प्राप्त हो सकता? अन्य सभी लोगों की तरह तुम भी ईश्वर की संतान हो। ईश्वर की संतान के लिए कौन सी चीज दुर्लभ है? इसलिए निराश न हो।

भाग्यवाद का सहारा लेकर दुख मत प्रकट करो। लगातार अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करो। उद्यम या प्रयास ही एकमात्र विधि है। जिससे सभी सुख प्राप्त हो सकते हैं। निष्क्रिय जीवन को धिक्कार है।